परछाई

डॉ. मधु पंत

स्पर्श Sparshmani मणि

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

ISBN : 978-81-906764-5-8

परछाई

लेखक :
डॉ. मधु पंत

प्रकाशक :
स्पर्शमणि
104 पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली – 110065
मो. नं. 9958077550

संस्करण :
सन् 2012

चित्रांकन
राहुल और मनजीत

रूपांकन
श्रीमती सरस्वत

मूल्य : ₹95/-

परछाई

प्रेरणा स्रोत – श्राव्या को...

बच्चों से.....

नन्हे साथियो!

मालूम है यह कहानी किसकी है? न राजा की न रानी की, न दादी की न नानी की, न भिश्ती की न पानी की, न अन्धी की न कानी की..... यह कहानी तो है एक जंगल में रहने वाले ढेर सारे जानवरों की नादानी की। यह जंगल ऐसा था जहाँ सब जानवर आपस में हिल–मिलकर प्यार से रहते थे। खरगोश, भेडिया, भालू, घोड़ा, गधा सभी आपस में मिल–जुल कर खुशी–खुशी रहा करते थे।... लेकिन एक दिन आ गया इस जंगल में एक तूफान। यह तूफान कोई आँधी–पानी भरा तूफान नहीं था, यह था एक अनोखा तूफान– डर का तूफान... अफ़वाह का तूफान....

इस तूफान का कारण क्या था जानने के लिए पढ़नी पड़ेगी पूरी कहानी...और तब जान पाओगे कि व्यर्थ की अफ़वाहों से कितना नुकसान होता है। अगर हम अपनी सोच को वैज्ञानिक व तर्क संगत बनाएँ तो निश्चित ही हम सुनी–सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करेंगे।.... हाँ एक बात और.... इस पुस्तक का चित्रांकन तुम्हारी ही तरह के बच्चों ने एक कार्यशाला में किया था। उन सभी का धन्यवाद। तो पढ़ो कहानी अपने साथियों के बनाये चित्रों की जुबानी।

पुस्तक के संबंध में.....

पुस्तक "परछाई" की कहानी उस वैज्ञानिक संकल्पना पर आधारित है जिसके अनुसार जब भी प्रकाश के मार्ग में कोई ठोस वस्तु आती है तो उस ठोस वस्तु की परछाई प्रकाश के विपरीत दिशा में बन जाती है। इस तथ्य को अत्यंत रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है जंगल में रहने वाले जानवरों की इस कहानी द्वारा। अपनी–अपनी परछाई से भयभीत जानवर जब छाया या परछाई बनने के वैज्ञानिक तथ्य से रूबरू होते हैं तो स्वयं पर हँसे बिना नहीं रह पाते। बच्चों में बचपन से ही अपरोक्ष रूप में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का समावेश कराना ही इस कहानी का उद्देश्य है।

एक दिन की बात है। खुला आसमान था। खूब अच्छी धूप निकली हुई थी, ठण्डी–ठण्डी हवा चल रही थी। बड़ा सुहावना मौसम था। बिल्ली मौसी धूप में अँगड़ाइयाँ लेते हुए अपनी मूँछें ऐंठ रही थी। तभी घास चरते हुए गधा वहाँ आ पहुँचा और बिल्ली मौसी को देखते ही चिल्लाया,

"अरे मौसी! यह तुम्हारे पीछे काला–काला क्या चिपका हुआ है?"
बिल्ली मौसी ने गधे को देखकर कहा, "अरे मसखरी क्यों करता है? जा–जा अपना काम कर।"

गधा बोला "नहीं–नहीं मौसी! मैं सच कह रहा हूँ, देखो तो सही।" बिल्ली ने पलटकर देखा तो सचमुच में उसके पीछे एक काली–सी छाया थी। बिल्ली ने उछलकर उसे हटाने की कोशिश की पर वह छाया तो जैसे चिपक गई थी। बिल्ली आगे जाती तो छाया भी आगे जाती, बिल्ली पीछे जाती तो छाया भी पीछे जाती। बिल्ली घबरा गई और रोने लगी। उसने पीछे मुड़कर गधे से कहा–भैया तुम्हीं मेरी मदद करके इसे हटाओ। पर मुड़ते ही उसने देखा कि गधे के पीछे भी वैसी ही एक काली सी छाया थी। वह चिल्लाई –

"गधे भाई देखो तुम्हारे पीछे भी एक काली चीज़ चिपकी हुई है।"
गधे ने पीछे मुड़कर देखा। सचमुच में एक काली छाया उसके पीछे भी थी। गधे ने कई दुलत्तियाँ झाड़ीं, लेकिन छाया हटने का नाम ही नहीं लेती थी। बिल्ली और गधा घबरा गए और डर के मारे भागने लगे। वे भागते जाते और चिल्लाते जाते–

हमें बचाओ, हमें बचाओ
पीछे कोई उसे हटाओ

जिसने हमको पकड़ लिया है
जाने कैसे जकड़ लिया है

उसे भगा कर हमें छुड़ाओ
हमें बचाओ, हमें बचाओ।

गधे और बिल्ली को भागते, चिल्लाते देखा एक घोड़े ने। उसने दौड़ कर उनको रोका, और पूछा,

"अरे भई, क्या बात है? तुम इस तरह से चिल्लाते हुए क्यों भाग रहे हो?"

बिल्ली और गधा दोनों साथ बोले,"वह देखो हमारे पीछे क्या चिपका हुआ है? हमें छोड़ता ही नहीं। हम भागते हैं तो वह भी भागता है। हम रुकते हैं तो वह भी रुक जाता है।"

घोड़े ने देखा और कहा, "अरे हाँ तुम्हारे पीछे तो सचमुच कुछ चिपका हुआ है। रुको! मैं इसे निकालता हूँ।" घोड़ा ज्यों ही आगे आया, बिल्ली और गधा दोनों चिल्लाए, "अरे तुम्हारे पीछे भी वैसी ही एक छाया चिपकी हुई है।" घोड़े ने पलटकर देखा तो सचमुच में उसके पीछे भी एक छाया चिपकी हुई थी। घोड़ा उछला तो छाया भी उछली। घोड़ा पीछे गया तो छाया भी पीछे गई। घोड़ा बोला,"सच में मुझे तो लगता है कोई भूत है। भागो–भागो".... और तीनों चिल्लाते हुए भागने लगे –

हमें बचाओ, हमें बचाओ
पीछे कोई उसे भगाओ

जिसने हमको पकड़ लिया है
जाने कैसे जकड़ लिया है

उसे भगा कर हमें छुड़ाओ
हमें बचाओ, हमें बचाओ।

गधे, बिल्ली और घोड़े तीनों को इस तरह से भागते हुए देखा एक भेड़िये ने। उसने उन तीनों को रोका और पूछा, "अरे भैया क्या परेशानी है? क्यों इस तरह मुँह उठाए भागते चले जा रहे हो?"

गधा बोला, "देखते नहीं हमारे पीछे एक छाया चिपकी हुई है। ऐसी चिपकी है कि हमारा पीछा ही नहीं छोड़ती। हम भागते हैं तो वह भी भागती है, हम रुकते हैं तो वह भी रुकती है।"

तभी जैसे ही बिल्ली ने पलटकर भेड़िये की ओर देखा वह चौंक पड़ी और चिल्लाई, "अरे भेड़िये दादा! तुम्हारे पीछे भी वैसी ही कोई काली चीज़ चिपकी हुई है।"

भेड़िये ने मुड़कर देखा। सचमुच में एक काली सी छाया उसके पीछे भी चिपकी हुई थी। वह खूब गुर्राया। उसने छाया को अपने दाँतों और पंजों से छुड़ाने की कोशिश की। लेकिन छाया टस से मस तक नहीं हुई। यह देखकर वह भी चिल्लाया "भागो, रे भागो" और चारों के चारों बेतहाशा भागने लगे। वे भागते जाते और चिल्लाते जाते–

हमें बचाओ, हमें बचाओ
पीछे कोई उसे हटाओ

जिसने हमको पकड़ लिया है
जाने कैसे जकड़ लिया है

उसे भगा कर हमें छुड़ाओ
हमें बचाओ, हमें बचाओ।

चारों को भागते हुए देखा एक भालू ने। भालू ठुमक–ठुमक कर नाच रहा था। चारों को बदहवास भागते देख कर वह चिल्लाया, "क्या हुआ? यों भागते हुए कहाँ जा रहे हो? रुको रुको! दो घड़ी रुको और मेरा नाच देखो।"

भेड़िया भागते–भागते बोला, "देखते नही हमारे पीछे एक काली छाया चिपकी है। हम भागते हैं तो यह भी भागती है।"

"हमारे रुकते ही यह रुक जाती है", घोड़ा बोला। "छाया नहीं यह तो कोई भूत है" बिल्ली बोली। "भागो.... भागो",.... पीछे मुड़कर गधा चिल्लाया। जैसे ही उसने भालू को देखा वह चौंक कर बोला, "तुम्हारे पीछे भी एक काली छाया चिपकी हुई है। तुम्हारे साथ वह भी नाच रही है।"

भालू ने पीछे मुड़कर देखा तो सचमुच में एक काली छाया उस के साथ नाच रही थी। अब तो भालू भी घबराया। वे पाँचों घबराकर, चिल्लाते हुए भागने लगे–

हमें बचाओ, हमें बचाओ
पीछे कोई उसे हटाओ

जिसने हमको पकड़ लिया है
जाने कैसे जकड़ लिया है

उसे भगा कर हमें छुड़ाओ
हमें बचाओ, हमें बचाओ।

उन पाँचों को भागते हुए देखा खरगोश ने। उसने सभी को रोका और पूछा, "अरे भैया रुको। ऐसे भागते हुए कहाँ जा रहे हो?"

पाँचों बोले, "हमें रुकने की फुरसत कहाँ है? देखते नहीं? हमारे पीछे एक भूत चिपका हुआ है।"

खरगोश उन्हें रोकते हुए बोला, "कहाँ है भूत? ज़रा मुझे भी देखने दो।"

पाँचों एक क्षण को रुके और पीछे मुड़कर बोले, "देखते नहीं हम सबके पीछे एक काली छाया चिपकी हुई है अरे! अरे! तुम भी देखो...."

"देखो तुम्हारे पीछे भी एक काली छाया चिपकी हुई है। भागो–भागो", पाँचों चिल्लाए।

उनकी बात सुनकर खरगोश खूब हँसा और हँसते–हँसते चिल्लाया,

"रुको–रुको, क्या तुम इस छाया से पीछा छुड़ाना चाहते हो?"

"हाँ–हाँ हम सभी इससे पीछा छुड़ाना चाहते हैं", पाँचों रुक कर एक साथ बोले।

तब खरगोश हँसते हुए बोला, "ज़रा मेरे साथ इस घने आम के पेड़ के नीचे आओ।" पाँचों डरते–डरते आम के पेड़ की छाया के नीचे गए और हैरान रह गए। वह काली चीज़ तो सचमुच में गायब हो गई थी। फिर खरगोश बोला, "अब तुम सभी धूप में जाओ। धूप में आते ही गधा चिल्लाया, " अरे यह तो सचमुच में फिर से आ गई।"

गधे की बात सुनकर खरगोश खूब हँसा और बोला,

"अरे मेरे दोस्तों यह कोई भूत–वूत नहीं है। यह तो हम सबकी परछाई है। जब भी हम रोशनी के सामने खड़े होते हैं तो परछाई बनती है। अंधेरे और छायादार जगह में रहें तो परछाई नहीं बनती। तुम अपनी ही परछाई से घबरा गए?"

खरगोश की बात सबके समझ में आई, "अरे हाँ यह तो अपनी परछाई है। अरे अपनी परछाई से भला कैसा डर?" सभी ने सोचा।

फिर सभी लोग खुश होकर नाचने लगे– बिल्ली, भालू, गधा, घोड़ा, भेड़िया, खरगोश... और सबने हँसते–हँसते देखा उनके साथ नाच रहीं थीं उन सबकी परछाइयाँ भी।

ISBN : 978-81-906764-5-8

मूल्य : ₹95/-

स्पर्श Sparshmani माणि

104, पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली–110065
फोन नं. 011–26223242, म.नं. 9958077550